अमृत प्रार्थना
भगवान से

सर्वप्रथम भगवान से प्रार्थना करेंगे
हे प्रभु! हे अंतर्यामी! हे जगतपते!हे सामर्थ शाली!
सारे जगत के लोग आपकी माया से मोहित हैं।
आपकी माया सबको नचा रही है, कठपुतली की भांति नचा रही है।
लेकिन हे प्रभु! जो आपकी शरण में आ चुके हैं, वे भक्त, वे साधक,वे संत,वे सिद्ध,माया उनकी सेवा कर रही ह।मार्ग प्रदान कर रही है आपकी और आने के लिए।
आप शरणागत वत्सल हैं। अपनी शरण में आए हुए को आप स्थान प्रदान करते हैं।
मैं भी आपकी माया में भटक रहा हूँ। कभी संसार,कभी स्वजनों में,भाई बाँधवों में,कभी विषयों में,कभी मान सम्मान,पद प्रतिष्ठा में! अर्थात माया के इन अनंत जालों में मैं उलझा हूँ,मैं भटक रहा हूँ।
मुझे मार्ग नहीं प्रतीत हो रहा। मैं किस ओर से, किस प्रकार से आपकी ओर आऊँ।अतः हे प्रभु! मैं इस माया की कठपुतली ना बन जाऊं!
मैं आपका बनूँ ,ऐसी आप कृपा करें!मुझे मार्ग प्रदान करें!!अपनी भक्ति प्रदान करें!!अपना ज्ञान प्रदान करें!!अपना वैराग्य प्रदान करें!!
मुझे अपना बनाएँ! मैं आपको अपना बनाऊँ!
ॐ शांति शांति शांति!